उस सेवा में परमेश्वर का काम करना सीखो, जो उसने तुम्हें
सौंपी है

हम परमेश्वर की सेवा उन्हीं वरदानों से करते हैं जो उसने हमें दिये हैं। यही वरदान हमारी सेवकाई को जन्म देते हैं। पवित्र आत्मा के वरदानों की तुलना शरीर के अंगों से की गई है। जब हम समझते हैं कि शरीर के अलग-अलग अंग किस प्रकार काम करते हैं, तब हम यह भी समझते हैं कि आत्मा के वरदान कैसे कार्य करते हैं।

रोमियों 12:4-5

“जैसे हमारे एक शरीर के बहुत से अंग हैं और उन सब अंगों का एक
ही काम नहीं है, वैसे ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक ही शरीर हैं और आपस में एक-दूसरे के अंग हैं।”

शरीर का हर अंग दूसरे के लिये है। पैर अपने लिये नहीं चलते, बल्कि पूरे शरीर को उठाते हैं। हाथ केवल स्वयं के लिये नहीं हैं, बल्कि शरीर की सेवा करते हैं भोजन मुँह तक ले जाते हैं, शरीर को धोते हैं, बाल सँवारते हैं। आँखें केवल अपने लिये नहीं देखतीं, बल्कि पूरे शरीर के लिये। कान अपने लिये नहीं सुनते, त्वचा अपने लिये नहीं ढकती, बल्कि पूरे शरीर की रक्षा करती है।

उस सेवा में परमेश्वर का काम करना सीखो, जो उसने तुम्हें
सौंपी है

हृदय केवल अपने लिये नहीं धड़कता, बल्कि पूरे शरीर में रक्त पहुँचाता है। यही सिद्धान्त आत्मिक वरदानों पर भी लागू होता है। जहाँ आपसी सहयोग नहीं होता, वहाँ कमी है—वहाँ परमेश्वर का आत्मा नहीं है। लेकिन जहाँ पवित्र आत्मा है, वहाँ हर कोई एक-दूसरे की मदद करता है।

यदि तुम्हारा मसीह की देह में कोई योगदान नहीं है, या तुम्हें किसी की मदद की आवश्यकता नहीं लगती, तो यह इस बात का चिन्ह है कि तुम आत्मिक रूप से मरे हुए हो। मरा हुआ अंग न कुछ करता है और न ही जीवन में भाग लेता है। उसी तरह यदि तुम कोई योगदान नहीं करते, तो आत्मा में तुम सूखी हड्डी समान हो। इस अवस्था में मत रहो आज ही जीवित हो जाओ!

शायद तुम कहो: “मैं अपनी सेवा नहीं जानता, इसलिये मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि परमेश्वर मुझे बताए।”
पर भाई, केवल प्रतीक्षा करने से कुछ नहीं मिलता। बहुत लोग सालों इसी तरह बैठ जाते हैं और खाली रह जाते हैं। वे केवल अनुमान लगाते रहते हैं, जबकि दूसरे लोग परमेश्वर के काम में आगे बढ़ते हैं। इसलिये प्रतीक्षा मत करो! (पढ़ो 2 राजा 7:1-15)।

सेवा का ज्ञान तुम्हें तभी होगा जब तुम किसी भी छोटे कार्य में हाथ लगाओगे। जैसे ही तुम कार्य करोगे, तुम पहचानोगे कि कहाँ तुम्हें सबसे अधिक आनन्द और सामर्थ्य मिलती है। वहाँ परमेश्वर

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

उस सेवा में परमेश्वर का काम करना सीखो, जो उसने तुम्हें
सौंपी है

तुम्हारे लिये दरवाज़े खोलेगा। छोटा आरम्भ करो, क्योंकि वही मसीह की देह के लिये बहुत मूल्यवान है। मसीह समय पर उसे बढ़ाएगा।

कोई दर्शन, सपना या स्वर्गदूत का इंतज़ार मत करो।

2 कुरिन्थियों 5:7
“क्योंकि हम विश्वास से जीवन बिताते हैं, न कि देखने से।”

तो शुरुआत कैसे करोगे?
जहाँ तुम रहते और प्रार्थना करते हो, वहाँ परमेश्वर के लोगों के साथ संगति रखो। अपने को अलग मत करो। कलीसिया की सेवाओं में हाथ बँटाओ। जहाँ भी तुम्हें अवसर मिले विचार, योग्यता, समय या श्रम से अपना योगदान दो। तब तुम पाओगे कि परमेश्वर तुम्हारा विशेष उपयोग करता है।

कभी-कभी सेवा तुम्हारे लिये भोजन जैसी बन जाएगी। जैसा यीशु ने कहा:

यूहन्ना 4:34

उस सेवा में परमेश्वर का काम करना सीखो, जो उसने तुम्हें
सौंपी है

“यीशु ने उनसे कहा, ‘मेरा भोजन यह है कि मैं अपने भेजने वाले
की इच्छा पूरी करूँ और उसका काम पूरा करूँ।’”

जब तुम सेवा नहीं करते तो भीतर एक बोझ या बेचैनी बने, तो यह इस बात का चिन्ह है कि परमेश्वर ने तुम्हें अपनी सेवा में बाँध दिया है।

ध्यान रखो: वरदान और सेवकाई स्वयं के लिये नहीं, दूसरों की भलाई के लिये हैं। यदि तुम्हारा लक्ष्य धन, प्रसिद्धि या नाम बनाना है, तो वह आत्मा पवित्र आत्मा नहीं है, बल्कि शत्रु की आत्मा है। पर यदि तुम्हारा उद्देश्य दूसरों की मदद करना है, तो परमेश्वर तुम्हारे लिये और मार्ग खोलेगा।

यदि अब तक तुम किसी विशेष चिन्ह की प्रतीक्षा कर रहे थे, तो अब जान लो: प्रतीक्षा मत करो। परमेश्वर के काम में लगो, और वह स्वयं तुम्हें दिशा देगा। लेकिन यदि तुमने अब तक मसीह को अपने जीवन में ग्रहण नहीं किया है, तो सबसे पहले वही करो। तुम उस स्वामी का काम नहीं कर सकते जिसे तुमने स्वीकार ही नहीं किया। इसलिये आज ही यीशु मसीह को अपने हृदय में ग्रहण करो, बपतिस्मा लो, और पवित्र आत्मा तुम्हें मार्गदर्शन करेगा।

पूरा मन लगाकर परमेश्वर की सेवा करना खोजो और परमेश्वर तुम्हें

उस सेवा में परमेश्वर का काम करना सीखो, जो उसने तुम्हें सौंपी है

आदर देगा।

प्रभु तुम्हें आशीष दे!

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp